पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आज हमारे पास चार तरह के कॉन्शियसनेस हैं। या तो हम मनी माइंडेड हैं, मटीरियल माइंडेड हैं, मशीनरी माइंडेड हैं या फिर मैन माइंडेड हैं। ये चारों कॉन्शियसनेस को चलाने के लिए एक और कॉन्शियसनेस की ज़रूरत है, जिसको हम कहते हैं माइंड, और माइंड को चलाने के लिए हमारे पास एक अद्भुत शक्ति है, जिसे हम कहते हैं मेडिटेशन।

आज प्रत्येक मनुष्य उपरोक्त कॉन्शियसनेस के आधार से कर्म करता है। यही चेतना उसके अंदर निरंतर चलती रहती है। वो बात भी करेगा, तो भी भौतिकता को लेकर, या मटीरियलिस्टिक वर्ल्ड की। जिसमें पैसा, घर, गाड़ी आदि शामिल हैं। अब मन की जो शक्ति है, उस शक्ति का उपयोग इन सारी चीज़ों को प्राप्त करने में यदि आप करते हैं, तो ये कोई बड़ी बात नहीं है। बात है हमारी सारी ऊर्जा का उपयोग ऐसी चीज़ों को प्राप्त करने में होता है जो हम चाहें तो बिना प्रयास के हमारे पास आ सकती हैं। आप देखो, पूरे जीवन हम सभी ऑब्जेक्ट्स को इकट्ठा करने में लगा देते हैं, और बाद में खुद ऑब्जेक्ट बनकर सम्भालते हैं। जैसे आपने घर, गाड़ी खरीदा, खूब बैंक बैलेंस बनाया, डिपॉज़िट किया, तो बाद में उसको सम्भालने में ही आपकी बुद्धि यूज़ होती है। तो आप क्या हो गये, एक मशीन बन गये। है ना ऐसा! अब देखो, सारी चीज़ों के साथ हमारा

मोह इतना ज़बरदस्त है, जिसके कारण हमारा मन अपनी शक्तियों को इनसे बाहर प्रयोग करने में असक्षम है। ज़्यादातर लोग अपना जीवन पैसा कमाने के पीछे ही गँवा रहे हैं। यानि मनी ने सबको और चीज़ों से मौन कर दिया है। अगर कहीं किसी के पास जाते हैं, तो कैसे प्रोग्रेस हो, कैसे सैलरी मिले, कैसे अधिक से अधिक हम पैसा कमायें, बस यही। आप देखो, कोई भी तपस्वी है, कोई ऋषि है, कोई महान आत्मा है, वो अपने मन को कुछ कल्याणकारी, हितकर कार्यों को करने में लगा रहे हैं। उनका मन भौतिकवादी बातों से इतना फ्री है कि वो कुछ भी करें, कैसे भी करें, वो कहीं बंधे हुए नहीं हैं। क्योंकि जीवन का मूल्य उन्हें पता है। जीवन कमाने, खाने और गंवाने के लिए नहीं है, समाज के लिए कुछ अच्छा कार्य करने के लिए मिला है।

एक शब्द में अगर हम कहें तो कह सकते हैं कि हम सब मेरा धन, मेरा घर, मेरा परिवार तथा मेरे में इतनी अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हैं कि सारी शक्ति अपने आप में सिमट कर रह गयी। आकर्षण का सिद्धान्त कहता है कि आप जिस चीज़ के पीछे भागेंगे, वो चीज़ आपको और ज़्यादा अपनी तरफ भगायेगी। अर्थात् दिन-रात इन्हीं बातों में हमारा ध्यान होगा तो वही चीज़ें आकर्षित होकर हमारे पास आएंगी और हमें परेशान भी करेंगी। मन जितना शांत होकर प्रकृति के बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठकर जो संकल्प करता है, जो सोचता है, बोलता है, उस व्यक्ति का मन ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के साथ जुड़ जाता है। वो जो कहेगा, प्रकृति, दुनिया, लोग अपने आप उसके लिए इंतज़ाम करेंगे। लेकिन उसके लिए इन आकर्षणों से अपने आपको निकालना पड़ेगा।

आपको ज़्यादा अपने मन को उलझाना नहीं है उन बातों में जिनसे आपका कोई लेना-देना ना हो। हमारी आजीविका के लिए ये सारी चीज़ें अपने आप उपलब्ध हो जाएंगी। मन जितना सूक्ष्म होगा, जितना सहज होगा, जितना सरल होगा, जितना उसके अंदर विचार या संकल्प कम होंगे, उतना उन सारी चीज़ों को अपनी तरफ ज़्यादा आकर्षित करेगा, जो स्थायी और सार्वभौमिक होगा। सार्वभौमिक चीज़ें पूरे विश्व को अपने आप ही मिल जाती हैं, उन्हें देना नहीं पड़ता।

वदायूँ-उ.प्र.। ककोड़ा मिनी कुम्भ मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पंचायत राज्यमंत्री रामगोपाल चौधरी। साथ हैं सांसद धरवेन्द्र जी, ब्र.कु. सरोज तथा अन्य।

बुटवल-नेपाल। माननीय सांसद सिंधु जलेसा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बृन्दा तथा ब्र.कु. दर्शनी।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। कार्यक्रम के दौरान मुम्बई के प्रसिद्ध मोमबत्ती के व्यापारी भावेश भाटिया को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा।

फाज़िलनगर-जोकवा(उ.प्र.)। मंगला आइडल चिल्ड्रेन स्कूल में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के पश्चात् प्रिन्सीपल साधना पाण्डेय को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सूरज तथा ब्र.कु. कृष्णा। साथ हैं क्षिप्रा मैम व अन्य।

गया-बिहार। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बौद्ध भिक्षुक सोसायटी ऑफ इंडिया के कोषाध्यक्ष किरन लाम्बा, बी.टी.एम.सी. सोसायटीज़ सेक्रेट्री रिटा. आई.ए.एस. एन. डोरजे साहब, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।

शाहगंज-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'एक दीप शहीदों के नाम' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनिता। मंचासीन हैं मुख्य अतिथि ऊर्जा एवं नियोजन राज्य मंत्री शैलेन्द्र यादव ललई, सेक्टर प्रमुख भाजपा अनिल मोदनवाल, लायंस क्लब अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल, सभासद श्याम जी तथा अन्य गणमान्य जन।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-10-2016

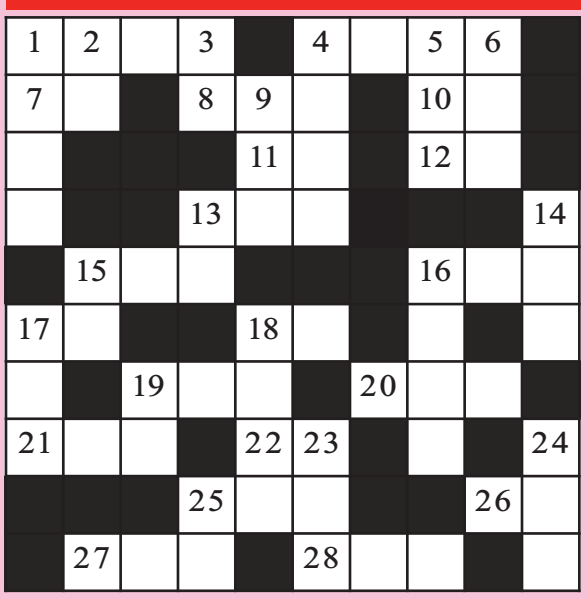

ऊपर से नीचे

1. भीषण मारकाट, भयानक युद्ध (4)
2. यथेष्ट, केवल, सिर्फ, खत्म (2)
3. गर्व, नखरा, लाड-प्यार से पला (2)
4. लुभावना, मोहक, कशिश (4)
5. जानलेवा प्रहार, हिंसक, कष्ट देने वाला (3)
6. बुलावा, खोज, प्राप्त करने की इच्छा (3)
9. कृत्रिम जल मार्ग, पानी ले जाने का नाला (3)
13. इस्लाम धर्म की मुख्य पवित्र यात्रा (2)
14. ....तुम्हारी ओ प्यारे भगवन, क्षणिक दर्शन (3)
15. .... रूप की बीमारी से बच के रहना है (2)
16. मिट्टी का तेल, केरोसिन (4)
17. परिणाम, फल, परीक्षा फल (3)
18. ऐसा समूह जहाँ आध्यात्मिक बातें हों (4)
19. अधिक, बहुत, सीमा के पार (2)
23. तपा हुआ, उष्णता, उत्तेजक (3)
24. काल, वक्त, अवसर (3)
25. धन-सम्पत्ति, प्रयोजन, अभिप्राय (2)

बायें से दायें

1. अधीर होना, व्याकुल होना (4)
4. .... महापाप, आत्महत्या (4)
7. महीना (2)
8. पिता, सिया के पिता (3)
10. निचला हिस्सा, आधार (2)
11. खुशी, आनंद (2)
12. किस समय, कभी नहीं (2)
13. अपहरण, चोरी (3)
15. जो राज़ को नहीं जानता है वही....होता है, ना खुश (3)
16. ज़ख्मी, चोटिल (3)
17. गीला, आर्द्र, भीगा हुआ (2)
18. जो सौतेला न हो, मातेला (2)
19. भूतकाल, जो बीत चुका हो (3)
20. हृदय, दिल, हिम्मत (3)
21. जागरण, सजग होना (3)
22. ....तारे कुसंग बोरे (2)
25. यदि, यद्यपि (3)
26. बराबर, एक जैसा, सदृश (2)
27. शक्तिशाली, योग्य, उपयुक्त (3)
28. बारीक, अति पतला (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

वर्ग पहेली-3-2016 का उत्तर

ऊपर से नीचे	बायें से दायें
1. अधर	1. अक
2. कर्म	3. सतयुग
3. समझ	5. स्वधर्म
4. तला	6. कमला
5. स्वचिंतन	8. चिर
6. कल	9. सुलझ
7. परकाया	10. प्रकार
9. सुत	11. राजा
10. प्रजा	12. नमक
13. महफिल	15. दुआ
14. कदर	17. साया
16. आखरीन	18. हद
20. लाख	19. खलास
21. काबिल	21. काफिर
22. ताजधारी	22. तारीख
23. सहयोग	23. सम
24. मन	25. बिल
28. राज़	26. साजन
	27. सहन
	29. मजबूरी
	30. सुजाग

वर्ग पहेली-4-2016 का उत्तर

ऊपर से नीचे	बायें से दायें
2. फरिश्ता	1. नफरत
4. मद	3. प्रेम
5. साधक	5. सावधान
6. धारणा	8. रिश्ता
7. नस	9. रसद
8. रिवाज़	11. चालाक
10. दशानन	12. शान
11. चाकर	14. जनक
13. नरक	17. नर
15. नवीन	18. वीर
16. गटर	19. घाट
19. घातक	20. कनक
21. कामदेव	21. कान
23. सनातन	22. तरस
24. मनन	24. मज़ाक
26. लानत	25. नालायक
27. कमल	28. जतन
	29. वतन
	30. नत